Satya Ki Prapti Hi Sab Se Badi Prapti Hai

Date	:	25th March 2001
Place	:	Delhi
Type	:	Public Program
Speech Language	:	Hindi

CONTENTS

I Transcript

Hindi	01 - 09
English	-
Marathi	-

II Translation

English	10 - 18
Hindi	-
Marathi	-

ORIGINAL TRANSCRIPT

HINDI TALK

सत्य को खोजने वाले और जिन्होंने सत्य को खोज भी लिया है, ऐसे सब साधकों को हमारा प्रणाम।

दिल्ली में इतने व्यापक रूप में सहजयोग फैला हुआ है कि एक जमाने में तो विश्वास ही नहीं होता था कि दिल्ली में दो-चार भी सहजयोगी मिलेंगे। यहाँ का वातावरण ही ऐसा उस वक्त था कि जब लोग सत्ता के पीछे दौड रहे थे और व्यवसायिक लोग पैसे के पीछे दौड़ रहे थे। तो मैं ये सोचती थी कि ये लोग अपने आत्मा की ओर कब मुडेंगे। पर देखा गया कि सत्ता के पीछे दौड़ने से वह सारी दौड निष्फल हो जाती। थोडे दिन टिकती है। ना जाने कितने लोग सत्ताधारी हुए और कितने उसमें से उतर गये। उसी तरह जो लोग धन प्राप्ति के लिए जीवन बिताते हैं उनका भी हाल वही हो जाता है। क्योंकि कोई सी भी चीज़ जो हमारी वास्तविकता से दूर है उसके तरफ जाने से अन्त में यही सिद्ध होता है कि ये वास्तविकता नहीं है। उसका सुख, उसका आनन्द क्षणभर में भंगूर हो जाता है। और इसी वजह से मैं देखती हूँ दिल्ली में इस कदर लोगों में जागृति आ गई है। ये जागृति आपकी अपनी संपत्ति है। ये आपके अपने शुद्ध हृदय से पाये हुए, प्रेम की बरसात है। इसमें ना जाने हमारा लेना देना कितना है।

इसमें समझने की बात ये है कि अगर आपके अन्दर ये सूझबूझ नहीं होती, तो इस तरह से ये कार्य सम्पन्न नहीं हो सकता। इसमें एक चीज़ समझना है कि अनेक सन्तों ने इस देश में मेहनत की है। हर एक के घर-घर में उनके बारे में चर्चा होती है। और उन सन्तों के बारे में बहुत कुछ मालुमात बुजुर्गों को तो है पर बच्चों को भी हो जाती है। धीरे-धीरे ये बात जमती है कि आखिर ये लोग ऐसे कौन थे जिन्होंने इतना परमार्थ साध्य किया। पता नहीं कैसे इतने व्यावसायिक लोग जिनका सारा ध्यान रातदिन पैसा कमाने में, सत्ता कमाने में जाता है। वो मुडकर सहजयोग में आ गये। क्योंकि उनकी जो वह खोज थी उसमें आनन्द नहीं था। उसमें सुकून नहीं था। शान्ति नहीं थी। किसी प्रकार का विशेष जीवन नहीं था। जब मनुष्य ये पता लगा लेता है कि उसके अन्दर कोई ऐसी वास्तविक आनन्द की भावना आयी है, न ही उसने उस सुख को पाया, जिसके लिए वह इस संसार में आया। ना जाने कैसे एक ज्योत से दूसरी ज्योत जलती गयी और आज मैं देखती हूँ कि यहाँ हजारों लोग उपस्थित हैं जिन्होंने अपने अन्दर की अन्तरात्मा को पहचाना है।

सबसे पहले जान लेना चाहिए कि हमारे अन्दर जो बहुत सी त्रुटियाँ हैं, उसका कारण है कि हम लोगों ने धर्म को समझा नहीं है। जो कुछ धर्म मार्तंडोंने बना दिया, हमने उसी को सत्य मान लिया। उन्होंने कहा कि आईये कुछ अनुष्ठान करिये। यहाँ कुछ पूजापाठ करिये और कुछ इस तरह की चीज़ें बनायी गयी। मुसलमानों को भी इस तरह से पढ़ाया गया कि तुम अगर इस तरह से नमाज़ पढ़ो, और इन मुल्लाओं के कहने पे चलो तो तुम्हें मोक्ष मिल जाएगा। अब मनुष्य सोचने लगा कि ऐसा तो कुछ हुआ नहीं। ऐसी तो कोई प्राप्ति हुई नहीं। फिर ये है क्या? फिर हम ये कर्मकाण्ड क्यों करें? ये कर्मकाण्ड हमें बहुत ही गहरे अन्धकार में ले जाते हैं। हम लोग सोचते हैं कि उस कर्मकाण्ड से कुछ पाएंगे तो हमने कुछ पाया नहीं। जन्मजन्मान्तर से लोगों ने कितने कर्मकाण्ड किये हैं। उन्होंने

क्या पाया ? अब पाने का समय भी आ गया है।

आज इस कलियुग में ये समय आ गया है, ऐसा आ गया है कि आपको सत्य प्राप्त हो। सत्य की प्राप्ति यही सबसे बड़ी चीज़ है और सत्य ही प्रेम है। और प्रेम ही सत्य है। उसके ओर आप जरा विचार करें कि हम साधकों को खोजते हैं तो सोचते हैं कि हम सन्यास ले लें, हिमालय पे जाएं। अपने बाल मुण्डवा लें और इसी तरह की चीज़ें करें। जब सत्य का वास अन्दर है तो बाह्य की चीज़ों से और उपकरणों से क्या होने वाला है। इससे तो मनुष्य सत्य को नहीं पा सकता। क्योंकि इसके साथ कोई सत्य लिपटा ही नहीं है। तो करना क्या है ? करना ये है कि आपके अन्दर जो सुप्त शक्ति कुण्डलिनी की है, उसको जागृत करना है।

अब 'कुण्डलिनी की शक्ति आपके अन्दर है या नहीं' ऐसी शंका करना भी व्यर्थ है। हर एक इन्सान के अन्दर त्रिकोणाकार अस्थी में कुण्डलिनी की शक्ति है। और उसे जागृत करना बहुत ही जरुरी है जिससे कि आप उस चीज़ को आप प्राप्त करें जिसे मैं कहती हूँ, 'सत्य', 'वास्तविकता'। सबने कहा है कि, 'अपने को जानो, अपने को पहचानो।' लेकिन कैसे ? हम तो अपने आपको जानते नहीं है। ना जाने अन्दर से हम कितने त्रुटियों से भरे हुए हैं। लोभ, मोह, मद, मत्सर सब तरह की चीज़ें हमारे अन्दर है। और हम यह समझ नहीं पाते कि कहाँ से ये सब चीज़ें आ रही है, जो हमें इस तरह से ग्रसित की हुई है। इस चीज़ को अगर आप ध्यान से समझे कि एक बात है कि ये त्रुटियाँ सब बाह्य की है। आत्मा शुद्ध निरन्तर है। उसके ऊपर कोई भी तरह की लांछना नहीं है। और जब आई है तो ये किसी वजह से आयी होगी। हो सकता है कि आपकी परम्परागत आई होगी। पूर्वजन्म से आयी, माँ-बाप से आयी, समाज से आयी, ना जाने कहाँ-कहाँ से ये सब चीज़ आपके अन्दर समाविष्ट हुई।

अब इसके पीछे खोजते रहे कि ये कहाँ से आयी, इससे अच्छा है कि इसको नष्ट करें। ये हमारे अन्दर जो खराबियाँ हैं यही नष्ट हो जाएं तो फिर क्या हम एक शुद्ध चित्त बन जाते हैं। इसकी व्यवस्था जिस परमेश्वर ने आपको बनाया उसने की है। अब आपके अन्दर इतनी स्वतन्त्रता है कि आप अपने को पहचानने के लिए जो सर्व सिद्ध प्रक्रिया है उसे अपनाये और वह प्रक्रिया है कुण्डलिनी जागरण की। मैं यह बात कह रही हूँ ऐसी बात नहीं है। अनादि काल से इस भारत वर्ष में कुण्डलिनी की और कुण्डलिनी जागरण की बात की गयी है। हाँ, हालांकि उस वक्त ये कुण्डलिनी का जागरण बहुत कम लोगों को प्राप्त हुआ था और बहुत मुश्किलें होती थी। लेकिन इसका भी समय आ जाता है कि ये सामूहिक हो जाए। और आज यही बात है कि उस सामूहिक स्थिति में आपने कुण्डलिनी का जागरण पाया है। अब आप इस सामूहिक स्थिति में कुण्डलिनी के जागरण से प्लावित हुए हैं और जब आपके अन्दर एक विशेष रूप का चैतन्य स्वरूप प्रकट हुआ है, उस वक्त आपने ये सोचना चाहिए कि 'वास्तविक में मैं तो ये हूँ और आज तक ना जाने किस चीज़ के पीछे भ्रामकता में मैं जा रहा था।' ये सब होता गया। आपके अन्दर जमता गया, बनता गया। और ये सब आपके दुर्बुद्धि, सुबुद्धि और ना जाने किस चीज़ से झुँझता गया। सबसे बड़ी बात ये है कि हमने अगर अपने को पहचानना है तो सर्वप्रथम हमारा सम्बन्ध चारों तरफ फैली हुई इस चैतन्य सृष्टि से होना चाहिए। चैतन्य से एकाकारिता प्राप्त होनी चाहिए। और उसके लिए, चैतन्य से एकाकारिता के लिए कुण्डलिनी ही उसका मार्ग है। और कोई मार्ग नहीं। कोई कुछ भी बतायें और कोई मार्ग है ही नहीं।

लेकिन लोग आपको भुलावे में डालते हैं और लोग भटकने लगते हैं। मैं एक बार एक गुरुजी का प्रवचन सुन

रही थी तो उन्होंने शुरू में ही गालियाँ देना शुरू कर दिया। उन्होंने कहा 'आप लोग विकृत हैं'-माने गाली हो गयी और आपके जो तरीके हैं उसमें आप भगवान को नहीं खोज रहे हैं। आप प्रवृत्ति मार्गी हैं, आप हर एक चीज़ के तरफ दौड़ते हैं। ये तो बात सही है। आप इस तरफ से, उस तरफ से दौडते हैं और दौड़ के आप उसमें खो जाते हैं। इस दौड में इस तरह के प्रवृत्ती में हमारी सारी ही शक्ति नष्ट हो जाती है। आज ये चाहिए, तो कल वह चाहिए, परसो वह चाहिए। तो भाग रहे हैं इधर से उधर, उधर से उधर। अब ये जो उन्होंने गाली बक दी कि आप प्रवृत्ती मार्गी हैं, मान लेते हैं कि अच्छा हम प्रवृत्ती मार्गी हैं और वो दूसरे के लिए कहते हैं आप निवृत्ती मार्गी नहीं है। तो आप क्यों आत्मा को प्राप्त कर रहे हो? अगर आप निवृत्ती मार्गी हैं मतलब आपकी वृत्ती इधर-उधर नहीं दौडती तो आप आत्मा को पा सकते हैं। अब पहले ही इस तरह की कठिन समस्या उपस्थित कर दी कि सर्वसाधारण मनुष्य अपने को सोचेगा कि हाँ भाई, मैं तो हूँ प्रवृत्ति मार्गी। तो वो कहेंगे, 'ठीक है आप गुरुओं की सेवा करो उनको पैसा दो, उन पे मेहनत करो, ये कर्मकाण्ड करो, इधर पैसा लगाओ, उधर पैसा लगाओ और जिस तरह से हो सकता है तुम सब कुछ अपना परमेश्वर को दे दो, उसके बाद सन्यास ले लो।' अब आपको ये बात समझ में आ जाती है। भाई, ये आसान चीज़ है। पर ये अंधों की बात है। अच्छे भले आँख होते हुए कोई अगर कहें भी कि तुम अंधे हो तो कैसे मान लेना चाहिए। कोई कहेगा कि आप प्रवृत्ती मार्गी हैं, तो क्या उसे मान लेना चाहिए? अगर आपके अन्दर निवृत्ती नहीं है-ऐसा उनका कहना है- तो आप ज्ञानमार्ग-मतलब सहजयोग में नहीं आ सकते! इस तरह की एक भाषा ये लोग व्यवहार में लाते हैं। और उससे सर्वसाधारण जनता ये कहती है कि हमारे लिए ये ठीक है कि गुरुओं की सेवा करनी चाहिए। उनको सब दो, उनको सब समर्पण दो। इस तरह की हमारे अन्दर जो एक गलत धारणा बैठ जाती है और हम उसे मान भी लेते हैं क्योंकि हमारे अन्दर ये विश्वास ही नहीं है कि हम कभी अपने आत्मा को पा सकते हैं? और जिससे हम अपनों को जान सकते हैं। यहाँ आज बहुत सारे लोग बैठे हैं जिन्होंने कुण्डलिनी का जागरण और उसकी विशेषताओं से पूर्णतया अपने जीवन को प्रफुल्लित किया हुआ है। और आप लोग सभी इस प्रकार इस चीज़ को पा सकते हैं। आपमें कोई कमी नहीं है। कोई कमी नहीं।

ये शक्ति आप सबके अन्दर है। आपने कुछ भी किया हो, आपने कोई भी गलत काम किया हो, आप परमात्मा के विरोध में भी खड़े हो, चाहे कुछ भी किया हो, ये कुण्डलिनी तो अपनी जगह बैठी हुई है। और जब कोई उसको जगाने वाला आएगा तो वह जग जाएगी। और ये जो बाह्य की चीज़ें हैं, जिसको हम प्रवृत्ती कहते हैं, ये जो आपके अन्दर षड्रिपू हैं, एकदम झड़ जाएंगे। जब आप देखते हैं कि कोई बीज आप माँ के उदर में डालते हैं तो अपने आप प्रस्फुटित होता है। बीज में तो कुछ नहीं दिखाई देता। पर वह जब माँ के पेट में जाता है तो अपने आप प्रस्फुटित होता है। इतना ही नहीं पर उसके अंग प्रत्यंग में जीवन आ जाता है। उसी प्रकार कुण्डलिनी के जागरण से आप जागृत हो जाते हैं। और आपके अन्दर की जो वृत्तियाँ जो नाशकारी है, गलत है, अपने आप झड़ जाती है। ये बड़ा आश्चर्य का विषय है। किन्तु ये ऐसे बड़े आश्चर्य की बात नहीं है क्योंकि ये घोर कलियुग है और इसके प्रताप से ना जाने कितने लोग झुलस गये। और अब इसी कलियुग में यह कार्य होने वाला है और इसी कलियुग में आप इसे प्राप्त करने वाले हैं। और उस परमतत्व को आप प्राप्त करने वाले हैं, जो आपके अन्दर आत्मा स्वरूप विराजित उसके प्रकाश में आप अपने को जानेंगे। आप जानेंगे कि आपके अन्दर से कौन-कौन से दोष बीत गये। और अब आप शुद्ध चित्त वाले, आत्मास्वरूप हो गये हैं। इसको जब आप जान लेंगे कि यह स्थिति है और यही

सच्चाई है तो जितनी झूठी बाते हैं, आप उसे छोड देंगे। उससे क्या फायदा है? किसी भी झूठी बात को साथ लेकर के आप कहाँ जा सकते हैं? पर तब तक झूठ नहीं दिखाई देता जब तक आपकी आत्मा जागृत नहीं है। आत्मा के प्रकाश में ही आप उस झूठ को समझ सकते हैं जो आपको हर तरह से भुलावे में रखता है। और इस भुलावे में हर तरह के लोग घूम रहे हैं। आप दुनिया के तरफ नज़र करें। किसी भी धर्म का नाम लेकर आज लड रहे हैं। अरे भाई, जब धर्म है, एक ही परमात्मा है, तो लड़ क्यों रहे हैं? इस तरह के भुलावे जब तय्यार हो जाते हैं दिमाखी जमा-खर्च बन जाता है और उसको लोग अपना लेते हैं। उसका कारण यही है कि उनकी समझ में अभी यह प्रकाश नहीं है।

जब कुण्डलिनी का जागरण होता है तो आपका सम्बन्ध उस परम चैतन्य के शक्ति से हो जाता है। और ये सम्बन्ध बड़ा माना हुआ है। आइनस्टाइन जैसे इतने बड़े साइंटिस्ट ने ये कहा है कि जब आपका सम्बन्ध 'टॉर्शन एरिया' जिसे कहते हैं उससे होता है तो अकस्मात ऐसी चीज़े होती हैं जिस तरह से आप शांत चित्त के हो जाते हैं। और उस शांत चित्त में ना जाने कितनी उपलब्धियाँ होती हैं। जितने तरह के नये-नये प्रयोग आपने किये हैं, नयी-नयी उपलब्धियाँ होती है, ये सारी चीज़ें होते हुए भी जब लोग बार-बार जगकर सो जाते हैं और सोकर फिर जगते हैं ऐसी भी दशा चलती है। ऐसे लोग नहीं होते कि जो एक बार पार हो गये सो हो गये। उसके बाद उनकी गहनता कितनी है उस पर निर्भर है। अगर आप गहन है तो ये चीज़ जब आपके अन्दर जागृत होती है तो उसका बड़ा गहन अनुभव होता है। आप एकदम निर्विचारिता में चले जाते हैं।

आज ही मैं बता रही थी कि मनुष्य विचार क्यों करता है। हर समय हर एक चीज़ पे देखना और उस पर विचार करना। कोई भी चीज़ जैसे ये कार्पेट है। कहाँ से आया, कितने में आया, दुनिया भर की झंझट इसके लिए होगी। बजाय इसके कि इतना सुन्दर है उसका आनन्द लें, मनुष्य सोचता ही रहता है। और इस तरह के सोच विचार से मनुष्य कभी-कभी पगला भी जाता है। तो किसी भी चीज़ की ओर देख कर के उस पर प्रक्रिया करना, रिॲक्ट करना, इससे बढ़के और कोई गलती नहीं है। क्योंकि जब आप प्रक्रिया कर रहे हैं या रिॲक्ट कर रहे हैं तो वो आप अपने अहंकार के कारण या आपके अन्दर जो सुप्त चेतना, जिसको कन्डिशनिंग कहते हैं उसके कारण होता है। आप इसलिए नहीं कर रहे हैं कि आप उसे पूरी तरह से देख रहे हैं वह साक्षी स्वरूपत्व में आप उसको पूरी तरह से देखते हैं। अगर उसको आप पूरी तरह से देख लें तो उसका आनन्द आपके अन्दर पूरी तरह से समा जाएगा। सबसे तो बड़ी बात ये है कि इस दशा में आने की बात तो बहुतों ने की। मैं कह रही हूँ ऐसी बात नहीं है। वह बहुत से लोग समझ नहीं पाए होंगे या सोचे होंगे कि ये कैसे हो सकता है। हम तो एक मानव है और ये कैसे हो सकता है?

कुण्डलिनी जागरण से सब हो सकता है। और जब कुण्डलिनी आप सबके अन्दर वास्तव्य किये हुए है, जब वह स्थित है वहाँ, तो सिर्फ उसके जागरण की बात है। ये आपका धरोहर है, ये आपकी अपनी चीज़ है, जिसे आपने खरीदी नहीं, जिसके लिए पैसा नहीं दिया, किसी तरह की याचना नहीं की। वह अन्दर है। स्थित है। सिर्फ उसकी जागृति होने का विचार होना चाहिए। ये कुण्डलिनी शक्ति जो है वो आपकी बड़ी इच्छा है, बड़ी शुद्ध इच्छा है। शुद्ध इच्छा हमारे यहाँ कोई नहीं जैसे कि कोई साहब हैं, वह कहते हैं कि मैं एक मोटर खरीदना चाहता हूँ। फिर आ गयी मोटर। तो उसका आनन्द ही नहीं उठाया और लगे दूसरा कुछ ढूँढने, तो वह चीज़ हो गयी, तो लगे तीसरी

चीज़ ढूँढने। तो इसका मतलब है आपकी जो इच्छाएं हैं वह शुद्ध नहीं हैं। अगर वह शुद्ध इच्छा होती तो आप तृप्त होते। ये कुण्डलिनी शक्ति आपकी शुद्ध इच्छा है। और ये परमेश्वरी इच्छा है। ये जब आपके अन्दर जागृत हो जाती है, आप तृप्त हो जाते हैं। तृप्त हो जाते हैं माने आप ये सोचते हैं, कि ये जो मेरा मन-ये चाहिए, वो चाहिए सोचता था, उसकी जगह मैं ऐसी सुन्दर बाग में आया हूँ, जहाँ सुगन्ध ही सुगन्ध, आनन्द ही आनन्द, शान्ति ही शान्ति और प्रेम ही प्रेम बसा हुआ है। ये जब स्थिति आपकी आ जाए तो फिर आप मुड़के नहीं देखते उधर, जो गलत चीज़ है, अधिकतर होते हैं, ऐसे भी लोग जो उठते हैं फिर गिरते हैं। पर सहजयोग में जिसने इसे एक बार प्राप्त की है वो इतनी महत्वपूर्ण चीज़ है और इतनी सहज में होती है। तो इसके लिए कुछ करना नहीं है। इसके लिए आपको पैसा देना नहीं है। कोई चीज़ नहीं, प्रार्थना नहीं, कुछ भी नहीं। सिर्फ आपके अन्दर शुद्ध इच्छा होनी चाहिए कि मैं अपने महत्व को प्राप्त करूं। इस शुद्ध इच्छा से ही आप उसे प्राप्त करेंगे। सिर्फ मन में यही एक इच्छा रखें कि मेरी कुण्डलिनी जागृत हो जाए। ये इच्छा ही इतनी प्रबल है कि इससे अनेक लोग, अनेक देशों में मैंने देखा कि एकदम से पार हो गये।

जैसे एक देश है बेनिन। वहाँ पर पहले वो मुसलमान लोग थे। और वो फ्रेंच लोगों से इतना घबरा गये थे कि उन्होंने मुसलमान धर्म ले लिया। वो मुसलमान धर्म लेने के बाद वो संतुष्ट नहीं थे। उससे भी परेशान, उससे भी झगड़े। पर जब उनको सहजयोग मिल गया तो सब कुछ छोड़-छाड़के अब मजे ले रहे हैं। आपको आश्चर्य होगा कि अब वहाँ भी चौदह हज़ार सहजयोगी हैं। सब मुसलमान। ये तो मैं मुसलमान उनको मानती हूँ जिनके हाथ में चैतन्य है। जिनके हाथ बोलेंगे। आज कियामा का जमाना है। जब आपके हाथ बोलते हैं तो आप मुसलमान है नहीं तो है नहीं। मुसलमान का मतलब है समर्पण। और जब तक आपके हाथ नहीं बोलते आपके अन्दर समर्पण नहीं। इस तरह से गलतफहमी में पड़े हुए लोग आज ना जाने क्या-क्या चीज़ें करते हैं। इसके लिए ये नहीं है कि आप अगर वेदशास्त्र पढ़ते हैं या अगर आप तीर्थयात्रा करते हैं और दुनियाभर के ब्राह्मणों को, आज हमारे पड़ोस में एक बड़े जोरो में मन्त्र बोलने लग गये, ऐसे लोगों को आप प्रोत्साहित करते हैं और उनकी मदद करते हैं और उनको पैसा देते हैं, इससे कुछ नहीं होने वाला। ये सब बेकार की बाते हैं, बेवकुफी की बाते हैं। समझदारी क्या है? आपको क्या मिला, आपने सब दिया, आपको क्या मिला? क्या आपको अपना आत्मसाक्षात्कार मिला? आत्मसाक्षात्कार के बाद ही आप जानेंगे कि आप क्या हैं। और क्या आपकी शक्तियाँ हैं। और क्या कर सकते हैं आप, कितने समर्थ हैं। जब तक आपका अर्थ ही नहीं मिलता तो आप समर्थ कैसे होंगे? इस समर्थता में आप अनेक कार्य कर सकते हैं। मुझे तो इतना आश्चर्य होता है कि मैं जब परदेस में रहती हूँ तो ये परदेसियोंने, जिन्होंने कभी कुण्डलिनी का नाम भी नहीं सुना जब से पार हो गये तो ना जाने क्या-क्या चमत्कार कर रहे हैं दुनियाभर की चीज़ों में। जब मुझे बताते हैं तो मैं सोचती हूँ कि ये चमत्कार का भण्डारा जो है, ये कैसे एकदम से खुल गया! ये लोग इसे कैसे प्राप्त कर लिये।

सब तरह से शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, आपकी पूर्णतया प्रगति हो जाती है और आप इसे आत्मसात कर लेते हैं। इतनी सुन्दर चीज़ है कि अपने आत्मा को आप जाने। आप ही के अन्दर ये हीरा है। आप ही के अन्दर ये ज्ञान है। आप ही के अन्दर सब कुछ है। सिर्फ उसका मार्ग जो है सिर्फ कुण्डलिनी जागरण है और कोई नहीं।

ये मैं आपसे इसलिए बताना चाहती हूँ कि बहुत बार लोग मुझे प्रश्न पूछते हैं कि कुण्डलिनी के सिवाय कोई मार्ग है क्या? तो मैं बताती हूँ कोई मार्ग नहीं, सच तो यही है। उसमें मेरा लेना-देना कोई नहीं। लेकिन आपको तो जो सच है वही बताना है। कुण्डलिनी के जागरण के सिवाय आपके पास कोई और मार्ग नहीं है, जिससे आप अपने को भी जाने और दुनिया को भी जाने। जितने भी दुनिया भर के धन्दे हैं, छोडकर के अपने अन्दर सीधे बसी हुई इस महान शक्ति का उद्घाटन करना ही आपका परम कर्तव्य है।

आज लोगों को इतनी बड़ी तादाद में देखकर मेरा हृदय भर आता है। एक ज़माना था कि मैं दिल्ली को बिल्ली कहती थी, 'यहाँ तो किसी के खोपड़ी में सहजयोग घुसेगा नहीं।' आज मैं देख रही हूँ कि आप लोगों ने इसे आत्मसात किया है और अपनाया है। सब तरह का लाभ ही लाभ इसमें है। हर तरह का लाभ इसमें है। और महालक्ष्मी की कृपा हो जाए तो अपना देश भी एक सुरम्य और बहुत ही वैभवशाली देश हो सकता है। इसलिए हम सबको सामाजिक रूप से इसे फैलाना चाहिए। और इस सामाजिक रूप में हर तरह का पहलू हमें पहचानना चाहिए। जहाँ-जहाँ लोगों को तकलीफ है-मैंने कम से कम ऐसे सोलाह प्रोजेक्टस् बनाये हैं, जिसमें औरतों को मदद करना, बच्चों को मदद करना, बीमारों को मदद करना, बूढ़ों को मदद करना, खेतीहीन लोगों को मदद करना आदी अनेकों प्रॉजेक्टस् बनाये हैं, जिसमें सहजयोग कार्यशील है। और इस कार्य को करते हुए वो समझते हैं कि ये हमारे अन्दर इतनी शक्ति कैसे है। हम रोगियों को ठीक करते हैं, पागलों को ठीक करते हैं और व्यसनों से छुड़ाते हैं। ये सब शक्तियाँ हमारे अन्दर कैसे है? ये शक्ति आपके अन्दर आने का एकमेव साधन है कुण्डलिनी शक्ति का जागरण। उसको जागृत रखना चाहिए। इधर-उधर भटकने वाले लोगों को चाहिए कि वो जरा रुक जाए और देखें कि आप हैं कौन? आप कितनी महान वस्तु हैं, आपमें कितना सामर्थ्य है और इसे आपको किस तरह से इस्तेमाल करना चाहिए।

मुझे पूर्ण आशा है कि अगले वक्त जब मैं आऊँ तो इससे भी दुगने लोग यहाँ रहे। इतना ही नहीं वो लोग कार्यान्वित हों। सहजयोग में इसको पा कर के आपको सन्यास लेने की जरूरत नहीं है। हिमालय पर जाने की जरूरत नहीं। यहीं, यहीं समाज में रहकर के सहजयोग को फैलाना है। इस तरह से विश्व में एक विशेष सहज समाज बनाना है। इस सहज समाज में वही करना है जो सारे संसार का उद्धार कर सके। और जितनी इसकी त्रुटियाँ हैं उसको बिल्कुल पूरी तरह से नष्ट कर सके। ये कार्य आप सब लोग कर सकते हैं। इसलिए मैं आपसे बार-बार यही कहती रहूँगी कि अपनी जागृति करते रहना। मनन से जागृति बनी रहेगी और जो दोष हैं वह धीरे-धीरे निकल जाएंगे। इससे आप एक सुन्दर स्वरूप बहुत ही बढ़िया व्यक्ति हो जाएंगे। ऐसे अगर व्यक्ति समाज में हो जाए तो ये दुनिया भर की जो आफतें जो मची हुई हैं, दुनिया में ये मारामारी और किस तरह के घोर अत्याचार हो रहे हैं वो सब रुक जाएंगे। क्योंकि आप एक सुन्दर मानव प्रकृति हो जाएंगे। और इन सब चीज़ों से आप दूर रहकर भी आप इन पर प्रकाश डाल सकते हैं और सब ठीक कर सकते हैं।

आज के इस वातावरण में मनुष्य घबरा जा सकता है कि ये हो क्या रहा है? कैसे हो रहा है? इन सबको ये सोचना चाहिए कि एक दिन ऐसा आता है कि सब चीज़ें उनके सामने आकर खड़ी हो जाती है। और इतने दिन से चलने वाली ये चीज़ आज एकदम से उद्घाटित हो जाए, इसका कारण क्या, कि सब लोगों ने अभी तक आत्मा

को वरण नहीं किया है। अगर आत्मा को आप अपना ले तो ना ऐसी गलतियाँ होगी, ना ऐसी चीज़ें आगे चलेंगी। अब ऐसी रुकावट आ गयी है, इन्सान 'खटाक' खड़ा हो गया है। और सोचता है 'ये है क्या?' ये है यही कि आप भटक गये हैं और कुछ लोग तो खाई में गिर गये हैं भटक कर। यही चीज़ें हैं। इसको समझने की कोशीश करनी चाहिए।

इतने सालों से हमारे देश में जो महापाप चल रहा था आज उद्भव हुआ है। सामने आकर खड़ा हो गया। छोटेसे प्रमाण में। हो गया। इससे जागृत होने की जरुरत है कि कहीं हम भी इस भटकावे में तो चल नहीं रहे है, कहीं हम भी इस तरह लुड़क तो नहीं गये हैं कि जहाँ हमको जाना नहीं चाहिए। आपको आश्चर्य होगा कि आजकल मैं हिन्दुस्थान में देखती हूँ कि हर एक को ये बीमारी है। जो देखो वो ही पैसा बनाता है। जो देखो वही चाहता है कि किस तरह से नोच खसोटले। अच्छा है कि परदेस में ऐसा नहीं है। मुझे खुद हमेशा घबराहट लगी रहती है कि मेरे पास लोग खुद इसलिए आ रहे हैं कि किस तरह से मुझसे पैसा लें। अब ये पैसा मेरा जो है यह समाज कार्य के लिए है। इसलिए नहीं कि कोई चोर-उचक्के आये और मुझे लूट लें। पर वो कोशिश करते हैं। इसी प्रकार एक तरह की हमारे यहाँ भावना आ गयी है कि जैसा भी हो पैसा बना लो। पर ये लक्ष्मी नहीं है, अलक्ष्मी है। क्योंकि आप, जब तक लक्ष्मी आयेगी बहुत चंचल है और वह ऐसे रास्ते पे ले जाएगी कि आपके अन्दर अलक्ष्मी आयेगी। और उस अलक्ष्मी में आपको समझ में नहीं आएगा कि क्या करें। इसलिए किसी भी चीज़ की ज्यादती करने से पहले ये सोचना चाहिए कि हम कहाँ जा रहे हैं, कहाँ अग्रसर हो रहे हैं? कौन से जंजाल में फँस गये हैं। इस तरह की जो भावनाएं हैं कि पैसे के मामले में हमें बहुत सतर्क रहना चाहिए और दूसरों का पैसा कैसे निकाल सकते हैं, वो करना चाहिए, ये चलने वाला नहीं है। पैसा आप क्या अपने साथ उठाके ले जाएंगे? जितना सारा कुकर्म है वह आपही के खोपड़ी पे बैठेगा। क्योंकि मानती हूँ मैं कि ये घोर कलियुग है। इसीके साथ एक और चल रहा है जिसको मैं कृतयुग कहती हूँ। जब ये परम चैतन्य कार्यान्वित है और ये परम चैतन्य वह कार्य कर रहा है जिससे बार-बार ऐसे लोगों को ठोकरे लगेंगी और वो समझ जाएंगे कि ये हमारे सामाजिक हित के विरोध में है। अगर आपको लोगों का हित पाना है, आपके अन्दर वह शक्ति है उसे आप जागृत करें और उनका हित सोचें। किन्तु हित के मामले में भी स्वार्थ नहीं होना चाहिए।

असल में अपने यहाँ शब्द इतने सुन्दर हैं 'स्वार्थ।' स्वार्थ का मतलब 'स्व' का अर्थ। क्या आपने अपने 'स्व' का अर्थ जाना है? 'स्व' का अर्थ जानना ही स्वार्थ है। बाकी सब बेकार है। अगर ये चीज़ हम समझ लें कि हमने हमारे 'स्व' का अर्थ नहीं जाना है तो हम उधर ही अग्रसर होंगे वही हम कार्य करेंगे जिसमें 'स्व' को जानने की व्यवस्था हो। इसलिए आज कल की जो भी कश्मकश चली है, झगड़े बाजी चली है, उसकी परम्परा बहुत पुरानी है। अपने देश में स्थित हो गयी, पता नहीं कैसे? पहले जब अंग्रेज आयें, वो भी ये धन्दे करते रहें। वे हमारे यहाँ से कोहिनूर का हीरा ले गये। उनको जब तक आप कोई प्रेझेंट नहीं दो वो खुश नहीं होते। वह थोड़े प्रमाण में था अब तो बहुत ही बड़े प्रमाण में है। तब से शुरु हुआ। बढ़ते-बढ़ते हमारे राजकारणी लोगों ने शुरु किया और आगे बढ़ गया। अब राजकारणी ही नहीं पर हर एक आदमी ऐसा हो रहा है जो चाहता है कि किस तरह से ड़ाका ड़ाले, किस तरह से पैसा लूटे।

इसका एक ही मार्ग है, वह है सहजयोग। इसीसे हमारा समाज व्यवस्थित हो जाएगा। इसीसे हमारे समाज में आपसी प्रेम और आदर बनेगा। ना कि हम केवल पैसे का आदर करें। अब दूसरी बात है सत्ता। सत्ता के पीछे भी लोग पागल हैं। 'सत्ता चाहिए।' किसलिए चाहिए सत्ता? किसलिए सत्ता चाहिए? आपकी अपने पे सत्ता नहीं है। आप दुनिया पे सत्ता लेकर क्या करोगे? 'सत्ता चाहिए!' हमें ये होना है, वो होना है!' किस दिन के लिए? कौनसे उससे लाभ है? उससे आपका क्या लाभ होने वाला है? सत्ता करने के लिए भी बहुत बड़े आदर्श पुरुष हो गये। उनकी हिम्मत, उनका बड़प्पन, उनकी सच्चाई, वो तो है नहीं और सत्ता चाहिए। जैसे कोई बन्दर को सत्ता दे दीजिए तो वह क्या करेगा! मराठी में कहते हैं कि बन्दर के हाथ में जलती हुई लकड़ी दे दीजिए तो वह सबको जला देगा। वही है आज सत्ता का रूप। सब बन्दर जैसे अपनी सत्ता का इस्तेमाल करते हैं और पैसा कमाते हैं सत्ता के लिए। इस तरह के इन दोनों के द्वंद में चलने से आज हमारा देश बहुत ही गिर गया है सामाजिक रूप से। सहजयोग इसका इलाज है। सहजयोग में आने से आप समझ जाएंगे कि ये महामूर्खता है और इस मूर्खता को सहजयोगी नहीं करते। जिस दिन सहजयोग बहुत फैल जाएगा उस दिन ये सब चीज़ नष्ट हो जाएगी। ये रह ही नहीं सकता। इसलिए आपको ये समझना चाहिए कि जो आज-कल हम घबराये हुए हैं कि इस समाज का क्या होगा? उसको ठीक करने का भी, उसको सही रास्ते पर लाने का भी उत्तरदायित्व आपका है। आप कर सकते हैं। सहजयोगी ये कर सकते हैं और जो लोग सहजयोग में नहीं है उनको ला सकते हैं। हमें जो अच्छी समाजव्यवस्था चाहिए, अच्छी एक समाजव्यवस्था हो जिसमें कोई किसीको खसोटे ना और सब लोग आपस में प्रेम भाव से रहे, तो इसका इलाज सिर्फ सहजयोग कर सकता है।

सहजयोग दिखने में सीधा-साधा है और सबके अन्दर शक्ति होने से सब सोचते हैं कि हम तो पार हो गये हैं। पर उसमें रमना पड़ता है। उसमें रजना पड़ता है। और उसके बाद ही उसकी सब शक्तियाँ जागृत हो जाती है। उससे आप हिन्दुस्थान ही नहीं सारे संसार का उद्धार कर सकते हैं और इस उद्धार की व्यवस्था होगी। अब इसमें कुछ-कुछ लोग ऐसे हैं कि वो शैतानी के पीछे हैं। उनकी इच्छायें शैतानी है। ठीक है, ऐसे लोग रहेंगे। मैंने आपको बार-बार बताया है कि अब ये 'आखरी जजमेन्ट' आ गया है। इस वक्त आप अगर अच्छाई को पकड़ेंगे तो आप उठ जाएंगे और बुराई को पकड़ेंगे तो दब जाएंगे।

हमें देखना चाहिए कि किस तरह से जगह-जगह में भूकम्प आते हैं। अभी गुजरात में भारी बड़ा भूकम्प आया था। वहाँ हमारे सिर्फ अठराह सहजयोगी थे। वो भी गुजरातियों का पता नहीं क्या, सहजयोग से खास मतलब नहीं है। अब टर्की में भी बहुत बड़ा भारी भूकम्प आया। वहाँ पर भी जितने भी सहजयोगी थे सब बच गये। एक से एक। उनके घर भी बिल्कुल सही सलामत। मैंने देखे थे क्योंकि आप परमात्मा के साम्राज्य में आ गये हैं। तो आपका संरक्षण है। तो आपको कोई मार नहीं सकता। कोई आपको नष्ट नहीं कर सकता। ऐसे ही और भी जगह है जहाँ भूकम्प आ गये। वहाँ भी हमने यही देखा है कि सहजयोगी एक भी नष्ट नहीं हुआ। ना उसका घर नष्ट हुआ। लातुर की ये बात है। लातुर में हमारा जहाँ सेंटर था उसके चारों तरफ, चारो तरफ खंदक पडे और बीच में सेंटर बिल्कुल ठीक था और एक भी लातूर का सहजयोगी मरा नहीं। कैसे हुआ? चतुर्दशी के दिन गणपति विसर्जन करते हैं, सबने विसर्जन किया और विसर्जन करके जो आये उनमें से जो लोग दुष्ट प्रवृत्ती के थे उन्होंने शराब पी। शराब पी कर के नाच रहे थे और नाचते-नाचते सब जमीन के अन्दर गये। लातुर में एक भी सहजयोगी किसी भी तरह से, कोई भी

बात से वंचित नही रहा। उसकी गृहस्थी, उसका घर सब ठीक थे। यह क्या चमत्कार नहीं तो और क्या है! इसी प्रकार आप भी समझ लें कि परमात्मा का जो संरक्षण है वह आपके ऊपर है। क्योंकि आप उसके साम्राज्य में हैं। इन सारे साम्राज्यों के बाहर आप इतने ऊँचे चले गये कि आपको अब किसी भी चीज़ का भय नहीं है। कोई भी चीज़ आपको नष्ट नहीं कर सकती। इस तरह से हमने सहजयोग में अनेको उदाहरण देखे हैं। अनेक लोगों को बीमारी से उठते देखा है। ड्रग्ज लेने वाले लोग एक रात में ही बदल जाते हैं। एक रात में बदल गये। किसीको आश्चर्य होगा कि ये कैसे हुआ? वही बात मैंने कही कि कुण्डलिनी के जागरण से अपने अन्दर की सब विकृतियाँ झड़ जाती है और इस तरह से हर जगह में ये कार्य हो रहा है। और लोग अब ये महसूस कर रहे हैं। इसको समझ रहे हैं कि परिवर्तन की बहुत जरुरत है। इस परिवर्तन के सिवा कुछ भी नहीं बदल सकता। कुछ भी ठीक नहीं हो सकता। ये मनुष्य ही है जो सब कुछ गड़बड़ करता है और ये मनुष्य ही है जो खुद इसको उठायेगा, आगे बढ़ायेगा। बड़ा विश्वास है मुझे कि, जिस तरह से यहाँ सहजयोग बढ़ा है और भी आगे बढ़ेगा और अनेक प्रांगण में, अनेक स्थिति में इसका प्रकाश चारों तरफ फैलेगा।

आप सबको अनन्त आशीर्वाद!

ENGLISH TRANSLATION

(Hindi Talk)

Scanned from English Divine Cool Breeze

I bow to all the seekers of truth and also to those who have already found it. Sahaja Yoga has spread in Delhi city in a big way. Once upon a time I could not expect to have even a few Sahaja Yogis in Delhi. The atmosphere in Delhi, in those days, was such that people used to run after power and money. I used to ask myself a question that when will these people go for the attainment of the Spirit? The pursuit for power is shortlived. It yields no results. Many people could achieve political position and many were thrown out of it. Similarly those who work for money have the same fate because running after the things which are unreal ultimately leads us to disappointment. The comfort and joy of the material acquisitions are ephemeral. But now I say that the people of Delhi are awakened to such an extent! This awakening is your own treasure, its the drizzle of love that has rained from your pure heart. I do not know what is my role in it? It is because of your discreetness, without which it could not have been achieved.

It is also to be understood that many saints and seers have worked very hard in this country. These saints are talked about in every Indian family and atleast elderly people know about them. Younger gener-ation also comes to know about them. After all who are these people who have done this tremendous work? How these Buisnessmen and politicians, who were running day and night after money and power have come to Sahaja Yoga? Because there was no joy and peace in their pursuits. That life was just boring. When human beings realise that while running after material things they could get neither the joy nor comforts, then he turns to seek the joy of the Spirit. Many lamps were enlightened with one light and today I find thousands of those have known their Selves (spirit) are sitting before me.

First of all we have to know that the reason of all the unsolved riddles that are with in us is that we have not understood as to what Dharma is. We have accepted Dharma as so called realigious authorities (धर्म मार्तण्ड) have told us. They told us to perform some rituals (अनुष्ठान) and to do worshipping and chanting. Muslims were also taught similarly that if they perform the Namaj in a particular way and go as per the direction of Mullas then they will achieve Salvation. But when nothing could be achieved by the rituals, it forced the seekers to think about it. Why are we caught in rituals? These rituals push us in deep darkness. None could get anything from these rituals. People have been performing these rituals since ages.

What did they attain? There is a destined time for getting self realization. This time has now come in this kaliyuga. Now you could attain the truth.

The attainment of truth is the biggest achievement. Truth is love and love is truth. If we give a little thought to the fact that to find out the truth we think that we should become Sanyasis; go to Himalayas, get our heads shaved and so on. When truth resides within us, what is the significance of exteral renunciations and rituals. With the help of such methods one can not attain the truth because truth has nothing to do with all these external activities. So what have we to do? We have to awaken the dormant power Kundalini which is within us. To have any doubt about the existence of Kundalini within us is useless. Kundalini resides in the triangular bone, called sacrum, at the end of the spinal cord in every human being. Its awakening is essential for attainment of truth and reality. All the saints and incarnations have said, 'Know Thyself'. But how? We do not know. Ourselves we are full of negativities from within. Attachement, Greed, Ego, Anger Jealousy and Lust, all sort of negativities are there within us. We are unable to understand the source of these negativities and the reason why they have captured us. If you watch it carefully then you will realise that these are external. The spirit is pure and eternal. Nothing could tarnish it. If these negativities have come in us, it might be because of the traditions of previous lives, parentage or society. No one knows from which sources have these negativities penetrated! So instead of trying to find the source and cause of these negativities, it will be better to destroy them. By their destruction our attention will become pure. Our creater the God almighty has made all the arrangements for it. He has made you free to adopt the proven method to 'Know Thyself? That is the method of Kundalini Awakening. I am not the first to say this. Regarding the kundalini and kundalini awakening it is being talked about in India since times immemorial. In olden times only a few seekers could get their kundalini awakened and that too with great difficulties. But times come when this awakening is made collective and now this time has come. You have got your Kundalini awakened - collectively. In this collective state you are being nourished by the Awakened Kundalini. Now a wonderfully awakened personality has expressed in you.

Now your should think that it is my 'Real Self'. Till now I have been caught in confusions, may be because of our brain or perversness. The biggest thing is that if we have to know ourselves then first of all we have to get connected with all pervading Chaitanya (Divine Power) of the Divine. We have to be one with Param Chaitanya and Kundalini Awakening is the only way to have this

oneness. There is no other way. There is no other way, whatsoever anyone may tell. But people try to confuse you and you get confused. Once I was listening to the discourse of a so called Guruji. He started his pravachan with abuses. He began with, "you are all perverts", your methods are not of seekers, you are all Pravrutti Margies (attached to the worldly objects). You are runing after material objects. This is alright. You all run from one thing to another and get lost in this pursuit. All our energy gets wasted in this pursuit. Today you desire this thing, tomorrow another and thus keep running after the material objects. Now you accept these invectives and think yourself to be Pravrutti Margis! Such Gurus say that without becoming detached (Nivrutti Margis) how could you seek the Spirit, The Atma?

Atma could be sought only when attention is in your control. So these so called Gurus create such difficult problems for the seeker that poor seeker thinks himself to be pravrutti Margi and unfit for seeking. Then these Gurus say, "Alright, you serve your Gurus, give them money, do this ritual and so on". They advise you to give away everything in the name of God and become Sanayasis and you believe it because it sounds easy but it is blind faith. If someone calls you blind, would you believe it? Similarly if they call you Pravrutti Margis then should you believe it? Untill you are detached you can not come to Sahaja Yoga, the 'Gyan Marga'. So these so called Gurus use such a language that poor seekers think it better to surrender before them. We accept such thought because of the lack of confidence in ourselves that we can attain Spirit and know ourselves. But believe it that today many such seekers are sitting here who have made their lives blossom with the Awakening of the Kundalini and its blessings. You could also get this awakening. There is absolutely no drawback in you, no drawback at all. This power is within all of you, you might have done wrongs, might have committed mistakes, might have stood against God almighty. Whatever you might have done, this Kundalini is sitting at its place. When some authorised (worthy) person comes to awaken it, it will be awakened and the attachment for material possessions, these Pravrutties, your six enemies (Shad Ripus) will run away from you. When you sow a seed in the womb of Mother Earth, it sprouts by itself. The sprouting energy is not apparent in the seed. But when it is put in the Mother Earth, it sprouts automatically. Not only this much, each of its part and parcel gets life in it. In the same way, by the awakening of the Kundalini you get awakened and you get rid of harmful attachments. Its surprising no doubt but it has become possible. Its the age of ghor Kaliyuga. No one knows how many people have suffered because of it but this awakening will be done in this Kaliyuga and you will attain that supreme

state (Param Tattava) today. This param tattava is throned in you as Attam Swarupa, as Divine Spirit. In its light you will know Thyself, you will know which of the negativities have left you and now you have become pure hearted (Shudha Chittas), Divine Personalities (Attama Swarupas). When you have the knowledge of your Real State and the Reality then you will give away all the negativities. What is the use of it? How far could you go with the untruth? It puts you in confusion and many seekers are lost in this confusion. Look at this world. People are fighting in the name of religion! When religion is one, when God is one, then why to fight in the name of religion? But such confusions are created and mental projections are done in such a way that people take to them. The reason is that their brains are not enlightened so far.

With the awakning of the kundalini you get connected to the all pervading power of Divine Love (The Param Chaitanya). This connection is well known. Einstein, the renounced Scientist, said that when you get connected to the torsion area then suddenly you become peaceful and have many achievments and new experiences in that state of peace. There are people who get awakened once but do not remain in that state forever. There are very few who could remain in the awakened state after getting self realisation. It depends upon the depth of the seeker. How you are? The impact of the Kundalini awakening is very deep. Immediately you go in to Thoughtless Awareness. Despite that, people are not perseverant about it. They get their awakening but after sometime go back in the same state of slumber and this goes on. Seekers who get established after realization are not available. It depends upon the depth they have. If the person is a sincere seeker then the awakening gives him a beautiful experience. Immediately one goes in thoughtless awareness. Only today I was telling that why human beings think to look at one thing or the other and think about it. Supposing this carpet is here. From where it might have come? What will be its cost? What will happen? All sort of thoughts will come about it in the mind. Instead of enjoying its beauty human beings start thinking about it and this thought process sometimes leads him to madness. So nothing is worse than reacting over anything. Because this reaction with in you is either because of your ego or super ego; we call it conditioning also. Reaction is not the result of watching something with full attention. That witness state is not yet there in you. You have to watch the object fully as a witness. If you could watch something in witness state then its joy permeates your being. I am not the first to tell about it; many people have talked about it. But they might not be able to understand or they might not be capable of achieving this state. They

would have thought that we are just human beings. How could we do it? With the awakening of kundalini it could be done. When the kundalini is there with in you, when it is reality, when it is placed there, then only thing that remains is to get the awakening. It is your own treasure, your own property. But you have neither bought it nor given any money for it, nor begged for it. It is with in you, it is innate. You have to think about its awakening.

This Kundalini power is your 'Pure Desire'. None other desire is pure. Someone will say, "I wish I had a motor!" He gets a motor. Without enjoying the comforts of the motor he starts hankering after something else and then after the third object and so on. It means all these desires are not pure. Had it been pure then you would have been contented. This Kundalini Shakti is your Pure Desire. It is the desire of 'God Almighty'. When it is awakened in you, you get contented. You get satisfied and think that instead of material desire now I have entered in to such a beautiful garden which is fragrant, full of joy, peace and love. When you achieve that state then you do not look back to material desires. To achieve this state in Sahaja Yoga is extremely beautiful. It happens very easily. you have to do nothing for it, give no money, do no rituals, no prayers, nothing. You should only have the pure desire to know the Spirit. With this pure desire you attain it. The only desire you should have is that my kundalini should be awakened. This desire is so powerful that I have seen many seekers get their awakening within no time. For example there is a country named Benin. Some people there were so much afraid of French that they accepted Muslim Religion. Even with that they were not satisfied! After coming to Sahaja Yoga, now they are very comfortable. You will be surprised that there are fourteen thousand Sahaja Yogis. They are all Muslims. According to me Muslim is the one whose hands speak. It is the age of Kiyama, you are Muslims only if your hands speak. Muslim means dedicated. How could you be dedicated if your hands do not speak? Confused people create different rituals. For this no study of Vedas and scriptures, no Pilgrimage is necessary. This morning our neighbours started chanting Mantras on the loud speaker. You people encourage them, help them and give them money! Nothing could be achieved with it. This is foolishness.

Wisdom is to see what you have recieved in return of your money. Did you get your self-realisation? After self realisation you will know what you are capable of. How much kshema you have? Untill you know the truth in you how could you be identified with it and become powerful (Samartha)? With this power you could do wonders. I am surprised that these foreigners who never heard the name of kundalini, they

are working wonders all over the world after getting self-realisation. When they tell me about the miracles, I am surprised to think how these miracles have become possible? How these people could get to it? You grow physically and mentaly; you attain complete growth and absorb it. Knowing the spirit is so wonderful. This diamond is within you. All the powers are within you. The only way to attain these powers is the awakening of the kundalini and none else. I am telling you this thing because many a people ask me if there is any other way but the awakening of the kundalini? I tell them there is no other way. I have no role in it. But I have to tell you honestly that there is no other way to know thyself and to know others except the awakening of the kundalini. Leaving all the other rituals and inaugrating this innate power is your pious duty.

My heart moves. I am really over joyed to see you all in such a big number. Once upon a time I used to think that how the people of this city will accept Sahaja Yoga? But today I am seeing it here that you all have accepted it and absorbed it. It is beneficial in every way. If the blessings of Shri Mahalaxmi are there, then our country will also become elegant and prosperous. So we all have to spread Sahaja Yoga in the society and know its social significance. Find out the suffering people. I have started atleast sixteen projects to help the needy women, children, diseased and old people and farmers. The projects are made in such a way that Sahaja Yoga could be activated in them and they feel the miraculous results of it and say, from where has this energy come in us? We could cure diseases, cure lunatics and relieve the addicts from their addiction. How have all these powers come in us? The only way to get this power is by kundalini awakening. It should be kept in awakened state. Those who run from one place to another should pause for a while and see who they are. How great you are? How powerful you are and how you could use that? When I come here next time, I hope the number will be double. Not only this much, people should establish themselves in Sahaja Yoga. After getting your self-realisation you need not become sanyasins, you need not go to Himalayas. You have to be in the society and spread Sahaja Yoga and create a Sahaja Society. Sahaja Yogis should work for the betterment of the whole world. It could destroy all the prevalent negativities. You all could do this work. So I request you again and again to get your awakening. With meditation, this awakened state will remain intact and slowly you will be free from all your negativities. You will become a beautiful personality. If the people of the society are transformed, all the problems, blood shed, and cruelty of the sociely will come to an end. You will become enlightend beings and set the things right with the light of your

attention. One can get frightened in the present atmosphere. What is this all going on? What is happening? One day or the other everything gets exposed and it becomes clear to us! Why? Because people have not yet achieved union with the spirit. Once you take to the spirit then neither will there be such misdeads nor will it continue in future. Such obstacles have now come. Human beings get alarmed and think that what is it? The reason is that you are misled and some people have fallen in the ditch.

One should try to stop the heinous activities that have been going on in our country for so many years. These have now been exposed. The degree of exposure is, ofcourse, small. Awakening is very essential. So you could see your state and find out that you are not being misled. Are we also being misled? In India, you will be surprised, every one is infected by this disease. Every one wants to make money, some how or the other wants to snatch it. I mean it is not the case in foreign country. I am always concerned about the fact that whether the people who come to me, do they also wish to extract money from me? All my money is meant for social work. It is not to be looked by thieves and rogues. But they try their level best. So in our country it has become a tendency to make money by hook or crook. Such money is not Laxmi, this is Alaxmi. Laxmi is very wanton (Chanchal). It will take you to all vices and assume the form of Alaxmi and you will be badly confused. So before getting in to extremities, we should think, "where are we going? What are we being drawn to? In what dragnet we are getting caught? So these ideas to extract money from the pockets of other people will not work out. We should be very conscious about them. Will you carry this money with you after death? This is all wickedness. It will tell upon your nerves. I accept it because it is Ghor Kaliyuga. One more Yuga is also going on with it. I call it 'Kruta Yuga'. Now the Param Chaitanya is active and working out every thing. Wicked people wil be hit again and again and they will know their deeds are against the society.

If you want to be benevolent towards the society than you have to awaken the power that is within you. There should be no selfishness in this regard. We have very beautiful words in our language. Swarth means the seeking for the spirit (स्व: + अर्थ). Have you known the meaning of seeking the spirit? To know the spirit is 'Swarth'. Everything else is meaningless. Once we realise that we have not known the meaning of the 'Spirit', we shall get drawn to that path and work to know the Self. All the struggles and quarrels are very traditional. How this state was developed in our country? I don't know. Britishers were here. They used to do the same thing. They took away kohinoor from our country. They could not be pleased without some bribe. But it was all on a

low pitch. Now it has assumed gigantic form. At the time of the British rule this tendency started and now it is taken too far by our politicians. Today not only the politicians but every one wishes to plunder money. The only way to get rid of this evil is Sahaja Yoga. It will discipline our society and generate love and respect for each other.

Another thing is Power. People are mad for it. They want power. What do they want power for? You do not have power over yourself, what shall you do if you attain power over the world? What for? What shall you gain out of it? Many great and ideal people were there in politics. Without their courage, truthfulness and greatness, how could you desire this power. It is just like giving power to the monkey. In Marathi language it is said that if burning wood is given to the monkey, it will burn everything. This is the state of politicians today. Politicians use political status to make money and make money to achieve political power. Because of this perplex state, socially our country has been degraded. Sahaja Yoga is the only remedy. After getting self-realisation people will understand. This is all foolishness. Sahaja Yogis should not commit it. When Sahaja Yoga spreads at a large level these things vanish automatically. Then this evil cannot exist. So you have to understand that we are responsible to bring the Society to the right direction. You could do it. Sahaja Yogis could do it. Those who are not Sahaja Yogis should be brought to Sahaja Yoga. If we want proper social system where there is no looting, where people live with love, The only cure is Sahaja Yoga.

Apparently Sahaja Yoga is very simple. Every Sahaja Yogi has power and they think that they are realised souls. But one has to get established in it. Only then its power will be awakened fully. With those powers you could reform not only India but the whole world. There should be some arrangement for the reformation. Desires are satanic, but I have told you many a times that it is the period of last judgement. If you take to virtue, you will be saved. But if you take to evil you will fall. We have to see how earthquakes cause devastation at different places of the world. Recently there was a horrible earthquake in Gujarat. We had only eighteen Sahaja Yogis there. I don't know why Gujaratis do not bother about Sahaja Yoga? There was an earthquake in Turkey also. But all the Sahaja Yogis were saved. No demage was done to their houses. I saw it my self. Since you have entered in to the kingdom of God, you are being protected. No one can harm you. No one can destroy you. Similarly earthquakes were there at various places but none of the Sahaja Yogis died nor their houses were destroyed. In Latur there was a monstrous earthquake. We have a centre there; a big abyss was created

all around the centre but the centre remained intact and none of the Sahaja Yogi was harmed at all. It so happened that on the fourteenth day of the moon after submerging the idols of Shri Ganesha in the sea, some wicked people started drinking alcohol. After such an auspicious ceremony, the drunkards were dancing. The wrath of the diety fell upon them. There was an earthquake and all were buried in Mother Earth. But none of the Sahaja Yogi in Latur was harmed. Their houses, children and family, everything was fully protected. Is it not a miracle?

You should also understand that you are also protected by the Divine because you have entered His kingdom. You have risen above all other kingdoms. Now there is absolutely nothing to be afraid of. Nothing can destroy you. In Sahaja Yoga we have many such examples. We have seen many people getting cured, drug addicts change overnight. People are astonished as to how it has happened! I have told the same thing that with the awakening of kundalini, all the perversions go away. That is how things are working out and people have started feeling its impact. They are realising that this transformation is much needed; without it nothing could change, nothing could improve. Human being is the root cause of all these perversions and he himself will now get the awakening and take it up further. I have full faith that the way Sahaja Yoga is spreading here, it will continue to go further and further, and its light will enlighten every house and every nook and corner of Mother Earth.

Now find out the Sahaja Yoga centre that are in your areas. Go to these centres and achieve depth in it. Only the experience of Self Realisation will not be much useful. Depth is essential. You must aquire all the knowledge of Sahaja Yoga. You could understand all the subtleties of it. You cant not know the subtleties by reading scripture like Koran or Bible. When these books were written, this work of collective awakening was not possible. These were written for those who are unrealised, so that some how or other they could get their awakening. But now you people have got it and to acquire further knowledge, you should go to the meditation centres, even if they are a bit away from your houses. I hope you will accept it and give due respect to it. The gift you have achieved is eternal. No one could get it since many many years. You could understand its significance only when you received its power. Please achieve it and respect your Self. Respect your Self and go deeper and deeper in it. Its my blessing that you should be very comfortable, full of joy and peace and become powerful yourself.

May God bless you